



रतनजोत का प्राकृतिक खेती में प्रभावी योगदान

दीपक हरि रानडे, मनोज कुरील, सुनील अर्सिया और स्मिता अग्रवाल

वर्तमान समय में कृषि प्रणाली गंभीर चुनौतियों के दौर से गुजर रही है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से न केवल उत्पादन लागत बढ़ी है, बल्कि मृदा की उर्वरता, पर्यावरणीय संतुलन और मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। ऐसे परिदृश्य में टिकाऊ, कम लागत और पर्यावरण अनुकूल कृषि विकल्पों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। इसी संदर्भ में रतनजोत जैसा बहुउद्देशीय पौधा किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक आशाजनक समाधान के रूप में उभरकर सामने आया है। यह पौधा एक ओर प्राकृतिक बाड़बंदी, मृदा संरक्षण और हरित आवरण को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर इसके बीजों से प्राप्त तेल वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। खंडवा कृषि महाविद्यालय परिसर में लगाए गए रतनजोत के पौधे न केवल हरियाली बढ़ा रहे हैं, बल्कि शिक्षा, अनुसंधान और व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए एक जीवंत मॉडल भी प्रस्तुत कर रहे हैं।

रतनजोत के पौधे काँटेदार और घने होते हैं, जो इन्हें खेतों और बागों की सीमा पर लगाने के लिए उपयुक्त बनाते हैं। महाविद्यालय परिसर में ये पौधे खुले क्षेत्रों और प्रयोगात्मक खेतों के किनारों पर लगे हुए हैं, जिनका उपयोग मवेशियों और जंगली पशुओं को फसल क्षेत्र से दूर रखने में, भूमि की स्पष्ट सीमा निर्धारित करने में, महंगे लोहे या तार की बाड़ के किफायती विकल्प के रूप में किया जा सकता है। इस तरह यह पौधा किसानों को कम लागत में दीर्घकालिक सुरक्षा प्रदान करने का साधन बन सकता है।

भगवंत राव मंडलोई कृषि महाविद्यालय,
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय,
खंडवा-450001

रतनजोत के तेल का उपयोग

रतनजोत के बीजों से प्राप्त तेल ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक ईंधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। यह तेल चूल्हों, डीजल पंपों, जनरेटरों और छोटे कृषि यंत्रों को चलाने में सक्षम है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होने के कारण यह न केवल सस्ता है, बल्कि पर्यावरण अनुकूल भी है। बीजों की बिक्री या तेल निष्कर्षण के माध्यम से किसानों को अतिरिक्त आय का स्रोत प्राप्त हो सकता है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

मृदा संरक्षण

मृदा संरक्षण की दृष्टि से भी रतनजोत का विशेष महत्व है। इसकी गहरी और मजबूत

जड़ें मृदा को बाँधकर रखती हैं तथा वर्षा के समय मृदा कटाव को रोकने में सहायक होती हैं। यह पौधा कम उर्वर या परती भूमि पर भी अच्छी तरह उग सकता है, जिससे अनुपजाऊ भूमि का पुनर्वास संभव हो पाता है और पर्यावरणीय संतुलन को बढ़ावा मिलता है।

कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण में योगदान

महाविद्यालय परिसर में रतनजोत की उपस्थिति छात्रों और किसानों के लिए एक जीवंत शिक्षण माध्यम है, जहाँ प्राकृतिक बाड़बंदी, वैकल्पिक ऊर्जा, मृदा संरक्षण और सतत कृषि के सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप में समझा जा सकता है। इस प्रकार रतनजोत किसानों के लिए बहुआयामी लाभ प्रदान करने वाला पौधा है, जो ग्रामीण स्वावलंबन,

औषधीय महत्व

रतनजोत में औषधीय गुण भी पाए जाते हैं, जिनका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में लंबे समय से किया जा रहा है। इसके तेल, पत्तों और अर्क में एंटीसेप्टिक, एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटीमाइक्रोबियल गुण पाए जाते हैं। इसके तेल का बाहरी प्रयोग घाव, फोड़े-फुंसियों और त्वचा संक्रमण में किया जा सकता है, क्योंकि यह बैक्टीरिया और फंगस की वृद्धि को रोकने में सहायक है। इसके पत्तों और लैटेक्स का लेप सूजन कम करने और घाव जल्दी भरने में पारंपरिक रूप से इस्तेमाल किया जाता है। रतनजोत के तेल का उपयोग पशुओं की त्वचा पर कीट और परजीवियों से बचाव के लिए किया जा सकता है। हालाँकि, इसका आंतरिक सेवन विषैला हो सकता है, इसलिए इसका औषधीय उपयोग केवल बाहरी और नियंत्रित रूप में किया जाना चाहिए।



रतनजोत के परिपक्व फल

प्राकृतिक खेती और टिकाऊ कृषि प्रणाली को मजबूत आधार दे सकता है।

किसानों के लिए उपयोगी

रतनजोत से प्राप्त लाभ केवल खेत की सुरक्षा और ईंधन तक सीमित नहीं हैं। यह पौधा ग्रामीण स्वावलंबन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, कृषि में बाहरी संसाधनों पर निर्भरता को कम कर सकता है तथा प्राकृतिक खेती और जैविक पद्धतियों के प्रचार में सहायक सिद्ध हो

सकता है।

रतनजोत एक बहुआयामी प्रजाति है, जिसकी उपयोगिता कृषि, ऊर्जा और पर्यावरण तीनों क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इसके बीजों से प्राप्त तेल का उपयोग नवीकरणीय ईंधन के रूप में किया जा सकता है, जबकि इसकी गहरी और मजबूत जड़ें मृदा संरचना को स्थिरता प्रदान कर मृदा के कटाव को रोकने में सहायक होती हैं।

महाविद्यालय परिसर में रतनजोत की उपस्थिति न केवल छात्रों को व्यावहारिक कृषि विज्ञान की शिक्षा प्रदान करती है, बल्कि सतत कृषि प्रणाली के एक प्रभावी और जीवंत मॉडल का भी प्रदर्शन करती है। ऐसे पौधों के माध्यम से किसानों को कम लागत, टिकाऊ और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित समाधान उपलब्ध कराना आज की आवश्यकता है, जिससे कृषि को अधिक आत्मनिर्भर और पर्यावरण अनुकूल बनाया जा सके। ■



कृषि और पर्यावरण के लिए उपयोगी

निवेदन

लेखक बंधु फल फूल पत्रिका के लिए अपने लेख और संबंधित फोटो, कवरिंग लैटर के साथ सिर्फ निम्न पोर्टल पर ही अपने मोबाइल नम्बर के साथ भेजें। ध्यान रखें कि फोटो मौलिक होने के साथ जेपीजे फॉर्मेट में और उच्च रेजोल्यूशन की हों। लेख में अधिकतम 1200 शब्दों की संख्या रखने का प्रयास करें। इसके अतिरिक्त सुझाव और प्रतिक्रियाएं भी भेज सकते हैं। लेख भेजने के लिए कृपया कृतिदेव 010 टाइप फेस का प्रयोग करें।

हमारा पोर्टल है :
epatrika.icar.org.in

—संपादक